प्रश्नः – इक्कीसवीं सदी में हुए आम चुनावों के विशेष संदर्भ भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्वों का में वर्णन करें।

या

मतदान व्यवहार क्या हैं? भारत में मतदान व्यवहार के कारकों का वर्णन करें तथा बताएं कि विगत दस वर्षों में क्या बदलाव आये हैं?

उत्तर :–

भूमिका

व्यवहारवादी क्रांति के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में मतदान व्यवहार के अध्ययन का प्रचलन बढ़ गया। एल्डर्सवेल्ड ने 1951 में पहली बार मतदान व्यवहार की अवधारणा का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार इसमें तीन तत्वों का अध्ययन किया जाना चाहिए – मतदान का परिमाण, मतदान का रूख (किसके पक्ष में मतदान हुए) तथा मतदान करने या नहीं करने के कौन से कारक प्रभावी होते हैं।

स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक शासन में अब तक 17 लोक सभा तथ अनेक विधान सभाओं के लिए आम चुनाव हो चुके हैं। प्रारंभ के तीन चार आम चुनावों को छोड़ दिया जाय तो लगभग सभी चुनावों में मतदान का परिमाण तथा रूख और कारक बदलते रहे हैं। इसलिए यहां मतदान को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन समीचीन प्रतीत होता है।

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

मोरिस–जोन्स, एन. डी. पामर सहित कई भातरीय विद्वानों यथा रजनी कोठारी, रामाश्रय राय, योगेन्द्र यादव आदि ने इस पक्ष पर प्रकाश डाला है। 1974 में पामर ने भारत सहित दक्षिण एशियाई देशों के अध्ययन के पश्चात पांच कारकों की चर्चा की यथा – उम्मीदवार के गुण, विचारधारा, राजनीतिक संलग्नता, सामाजिक आर्थिक कारक तथा धनबल, बाहुबल एवं पोपुलिस्ट राजनीति। परन्तु भारतीय राजनीति की परिस्थितियों में कई बदलाव आाये और पिछले दो दशकों में इनके अतिरिक्त कुछ नये तत्व प्रकाश में आये हैं जैसे दलीय नेतृत्व, सामाजिक न्याय एवं विकास तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद प्रमुख हैं। भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्वों को निम्नलिखि विन्दुओं मे स्पष्ट किया जा सकता है :–

1. सामाजिक आर्थिक विकास

भारत में विकास एक चिरप्रतीक्षित जनाकांक्षा रही है। विगत बीस वर्षों में लोगों के बीच सामाजिक–आर्थिक विकास, रोजगार, गरीबी उन्मूलन आदि सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरा है। भूमण्डलीकरण एवं ज्ञानमूलक समाज के चलते आर्थिक विकास मतदाताओं की पहली प्राथमिकता है। विकास का सीधा अर्थ मुलभूत संरचनाओं का निर्माण से लिया जाता है।

इसलिए मतदाता उन उम्मीदवारों या दलों को मत देते हैं जो आधारभूत संरचनाओं का व्यापक कार्यक्रमों का वादा करते हैं। 2005 के विधान सभा तथा 2014 के लोकसभा चुनावों में विकास महत्वपूर्ण मुदद्ा था। 2010 में बिहार में विकास पुरूष के रूप में प्रतिष्ठित नीतिश कुमार मतदाताओं की प्रथम प्राथमिकता बन गये हैं।

2. व्यक्तिगत गुण एवं करिश्माई नेतृत्व :– आम तौर पर यह समझाा जाता है कि लोग उम्मीदवार के व्यक्तिगत गुणों यथा कर्मठ, लोकसेवी, ईमानदार, तथा प्रभावशाली आदि गुणों के आधार पर मतदान करते हैं। यद्यपि भारत में लिस्ट सिस्टम नहीं है फिर भी पिछले दो दशकों मे ंदेखने को मिला है कि दल के करिश्माई नेतृत्व के आधार पर लोग मतदान करते हैं। प्रारंभ में जवाहर लाल नेहरू, 1960–70 का दशक में इन्दिरा गॉधी, 1977 में जय प्रकाश नारायण के आह्वान पर, 1990 की दशक में अटल बिहारी बाजपेयी तथा 2014 के बाद नरेन्द्र मोदी के करिश्माई व्यक्तित्व के कारण मतदाताओं ने मतदान किये।

3. विचारधारा एवं नीति :– लोकतांत्रिक राजनीति में विचारधाराओं का प्रबल प्रभाव देखा गया। कल्याणकारी, समाजवादी, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय तथ गरीबी उन्मुलन जैसी विचार धारा से प्रभावित हो कर लोगों ने मतदान किया। प्रारंभ में समाजवादी लोकतंत्र की विचारधारा प्रभावी रही। सामाजिक न्याय की विचारधारा के प्रभाव में 1989, 1991 तथा 1996 के लोकसभा चुनावों में मतदान हुए। चहुमुखी विकास एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जैसी विचारधारा 1998, 1999 के चुनावों में प्रभावी रहे। पुनः 2004 से लेकर 2013 तक लोकतांत्रिक सुदृढ़िकरण एवं लोक कल्याणकारी नीतियों जैसे सूचना के अधिकार, व्यापक रोजगार गारंटी (मनरेगा) तथा शिक्षा के अधिकार आदि की विचारधरा मतदान व्यवहार के लिए प्रभावी रही। 2014 से लागों के मतदान के लिए परिवर्तनवादी, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, तथा भ्रष्टाचार के उन्मुलन आदि नीतियों के पक्ष में मतदान हुए। परन्तु संविधान कार्यकरण समीक्षा आयोग 2002 के रिपोर्ट बताया गया कि दलो में नीतियों का लोप हो रहा है।

4. जातिवाद :– भारतीय राजनीति में जाति तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय समाज की संरचना में जाति तत्व सदियों से विद्यमान है। समस्त भारत में जातियों एवं जाति समूहों के बीच प्रभुत्व की स्पर्धा की स्थिति रही और किसी एक जाति या जाति समूह का राजनीतिक शक्ति संरचना पर अधिक प्रभाव रहा। डी.एल. सेठ ने ठीक ही लिखा कि ''जाति को प्रतियोगी संरचनात्मक राजनीति में खींचकर राजनीति समाज में अपना आधार बनाती है और प्रतियोगी राजनीति के नियमों में अपने को आबद्ध कर जाति राजनीतिक विशेषताओं को ग्रहण करती है।''एम. एन. श्रीनिवास का भी मत है कि जाति व्यवस्था राजनीति को और राजनीति भी जाति प्रथा को परिवर्तित और रूपान्तरित करती है फलस्वरूप प्रभुत्व हासिल करने के लिए जातियां जाति समूहों मे गोलबंद हो जातीं हैं।

यदि आम चुनावों पर नजर डालें तो 1967 से ही जाति तत्व महत्वपूर्ण कारक बन गया। परन्तु जातिवाद का उग्र प्रभाव हम मण्डल कमीशन की अनुशंसाओं को लागू करने के बाद की अवधि में खासकर उत्तर भारत में अधिक दृष्टिगोचर होता हैं। राजनीतिक दलों द्वारा उम्मीदवारों के चयन, कतिपय दलों का जाति विशेष हित के संरक्षक के रूप में पहचान, तथा निर्वाचन क्षेत्रों में जाति विशेष का बहुसंख्यक होना मतदान व्यवहार में जाति तत्व की प्रबलता को बढ़ा देता है। हिन्दी हार्टलैण्ड में 1989, 1991, 1996 के लोकसभा तथा 1990, 1995, 2000 तथा बिहार में बदले समीकरण में 2005, 2010 तथा 2015 के चुनावों के परिणाम से स्पष्ट होता है।

5. स्थिर सरकार :– बार बार दलीय समीकरण बदलने से राजनीतिक अस्थिरता आ जाती है। लोक कल्याण और आर्थिक विकास के कार्य रूक जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में मतदाता स्थिर एवं सुदृढ़ सरकार के लिए किसी खास दल को मतदान करते हैं। उदाहरण के लिए 1980, 1991 तथा 1999 के लोकसभा तथा कई राज्यों के चुनावों में सरकार की स्थिरता की आवश्यकता ने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया।

6. क्षेत्रीयता :– भारत में क्षेत्रीय विषमताएं खासकर विकास की दृष्टि से बहुत प्रबल हैं। इसके अलावा भूमिपुत्र की भावना भी मतदाताओं को प्रेरित करती हैं। माइरन वीनर ने इस बात की पहचान अपनी पुस्तक 'संस ऑफ द स्वॉयल' में की है। कई बार खास क्षेत्रों में मतदाता बाहरी व्यक्ति को मतदान नहीं देते। ऐसा ज्यादातर राज्य के आम चुनावों में देखने को मिलता है। उदाहरणस्वरूप हम विगत झारखण्ड विधान सभा चुनाव 2019 तथा दक्षिण भारतीय राज्यों में मतदान व्यवहार को ले सकते हैं।

6. धर्म एवं साम्प्रदायिकता :– भारत में धर्म और सम्प्रदाय मतदान का महत्वपूर्ण प्रेरक तत्व है। बंटवारे के बाद धार्मिक एकजुटता के कारण मतदान व्यवहार धर्म से प्रभावित रहा है। कांग्रेस शासन के अल्पसंख्यको के हित साधन की नीति के कारण मूसलमान उसी के पक्ष में वोट देते हैं। 1991 में बाबरी मस्जिद के ढ़हने के बाद साम्प्रदायिकता के आधार पर मतदान व्यवहार प्रभावित होने लगा जिसे विद्वानों ने कमण्डल की राजनीति का नाम। चुनाव अध्येताओं ने 'मण्डल–कमण्डल' की राजनीति शब्द का खुब उपयोग किया है। विगत दो आम चुनावों में देखा गया कि हिन्दुत्व का मुद्दा मतदान व्यवहार पर हावी रहा।

7. विविध कारक

उपरोक्त कारकों के अलावा कई अन्य कारक मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं जैसे भाषयी लगाव, प्रत्याशी या दल के जीत की संभावनाएं (इच्छा रहते हुए लोग वैसे प्रत्याशी को मत देते हैं जिसकी जीत की अधिक सम्भावना हेती है), वंशवाद (कुछ लोग किसी खास वंश या परिवार के प्रति समर्पित होते हैं), स्थानीय समस्याएं, उम्मीदवारों से रिश्तेदारी, बदलाव की

इच्छा (जिसे एन्टी इनकम्बेंसी फैक्टर भी कहते है), इलाके के गणमान्य व्यक्ति के कहने पर मतदान व्यवहार प्रभावित होते हैं।

निष्कर्षतः उपरोक्त कारकों में से कोई एक कारक कभी भी मतदान व्यवहार का कारक नहीं बनता अपितु इनमें से एक से अधिक कारणों से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। साथ ही समय समय पर मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक बदलते भी रहते हैं।